



माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

2023

32 पृष्ठीय

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षा का विषय CROP. PROD. & HORTICULTURE	विषय कोड A 2 0	परीक्षा का माध्यम HINDI
--	--------------------------	-----------------------------------

स्टीकर तीर के निशान ↓ से मिलाकर लगायें



पुस्तिका का रोल क्रमांक **B-23** **3158880**

अंकों में परीक्षार्थी का रोल नम्बर

2 3 6 7 2 7 7 4 1 X



परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे ↓

केवल परीक्षक द्वारा भरा जावे।
प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्तांकों की प्रविष्टि करें।

प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	प्राप्तांक (अंकों में)
----------------	---------------	------------------------

- 1
- 2
- 3
- 4
- 5
- 6
- 7
- 8
- 9
- 10
- 11
- 12
- 13
- 14
- 15
- 16
- 17
- 18
- 19
- 20
- 21
- 22
- 23
- 24
- 25
- 26
- 27
- 28
- 29
- 30
- 31
- 32

केन्द्राध्यक्ष/सहायक केन्द्राध्यक्ष एवं परीक्षक द्वारा भरा जावे ↓

प्रश्न पत्र का सेट **D**

क :- परीक्षार्थी का कक्ष क्रमांक **हैला**

ख :- परीक्षा का दिनांक **28 03 2023**

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा

हारार सेकेन्डरी परीक्षा केन्द्र क्र. **671027**

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर 28/03/23 L. S. Jaiswal	केन्द्राध्यक्ष/सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर केन्द्राध्यक्ष
--	---

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे ↓

प्रमाणित किया जाता है कि होलो क्राफ्ट स्टीकर क्षतिग्रस्त नहीं पाया गया तथा अन्दर के पृष्ठों के अनुरूप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टि एवं अंकों का योग सही है।

निर्धारित मुद्रा : नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदाकित सस्था के नाम की मुद्रा लगाए।

उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा; परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा

Smt. Rachana Tiwari
U.M.
Govt. Ex. H.S.S. Badwara
Mob. No.-9826119158
Valuar No.-9801

VALUAR
Prepared at
Govt. Ex. H.S.S. Badwara School,
Mob. No. 9891677251

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे ↓

केवल परीक्षक द्वारा भरा जावे।

2



+

=



योग पूर्व पृष्ठ



प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक - 01

(i) (c) मध्याह्न से ~~0888218~~

(ii) (d) उनाम से

(iii) (c) अंगूर

(iv) (a) भारत

(v) (b) गेहूँ का मामा

(vi) (a) रंगलॉल

B
S
E





प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक - 02.

(i)

66

(ii)

ऑडियो टर्मिनस ओलेसस

(iii)

कलिकायन या बंडिंग

(iv)

पपीत्र

(v)

नीम नीलम x क्वाहरी

(vi)

मश मशीन

B
S
E

4

योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ - -



प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक - 03

'अ'

'ब'

(i) केला - ~~स्यूजेसी~~

(ii) मिलीबग - ~~चिपचिपे ट्रेप~~

(iii) मूँगफली - ~~टिक्का~~

(iv) मटर - ~~पाउडरी मिल्ड्यू~~

(v) मशरूम - ~~कम्पोजिटिंग~~

B
S
E



प्रश्न क्रमांक - ०५

(i)
उत्तर ⇒ सफ़ेद मुसली का वानस्पतिक नाम -
क्लोरोफाइडम वीरीबिलिस्नम

(ii)
उत्तर ⇒ मैथा का ^{लैमिस्सि} लैमिस्सि है।
उल

(iii)
उत्तर ⇒ सिद्रल पट्ट से संबंधित ^{पौधे} पौधे
का नाम लेमन ग्रास है।

(iv)
उत्तर ⇒ मशरूम का वैज्ञानिक नाम
रुगेरिकस वाइस्पोरस है।

(v)
उत्तर ⇒ बीजरहित आम की किस्म सिन्धु है।



प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक - 05

B
S
E

(i) सत्य

(ii) असत्य

(iii) असत्य

(iv) असत्य

(v) सत्य

(vi) असत्य





प्रश्न क्रमांक - 06 का उत्तर

उत्तर :- सुखाना एवं निर्जलीकरण में निम्नलिखित दो अंतर हैं।

सुखाना	निर्जलीकरण
<p>① प्रकाश की उपस्थिति में सूखे फलों एवं सब्जियों को अलग नमी रहित करना सुखाना कहलाता है।</p>	<p>① फलों एवं सब्जियों को मशीनों द्वारा नमी रहित करना निर्जलीकरण कहलाता है।</p>
<p>② सुखाने की क्रिया में अधिक समय लगता है।</p>	<p>② निर्जलीकरण की क्रिया सीधे पूर्ण हो जाती है।</p>



प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक - 07 का उत्तर

उत्तर \Rightarrow मिश्रित तथा यौगिक उर्वरकों में निम्नलिखित दो अन्तर प्रमुख हैं।

मिश्रित उर्वरक

यौगिक उर्वरक

B
S
E

① अलग-अलग पोषक तत्वों वाले उर्वरकों को स्वयं मिलाकर तैयार किया गया उर्वरक, मिश्रित उर्वरक कहलाते हैं।

② जबकि यौगिक उर्वरकों में पहले से ही दो या दो से अधिक पोषक तत्व उपस्थित रहते हैं।

③ नाइट्रेट वा फास्फोरस युक्त उर्वरकों को नहीं मिलाया जाता क्योंकि इनको मिलाने से नाइट्रिक अम्ल बनता है जो पौधों को हानि पहुँचता है।

④ जबकि यौगिक उर्वरकों में नाइट्रेट स्व फास्फोरस प्राप्य अवस्था में उपलब्ध होते हैं।

सं क्र.

संकेत क्रमांक - 08 का उत्तर

उत्तर → अमोनियम सल्फेट वा किसान खाद
 में नाइट्रोजन (N) की प्रतिशत प्रतिशत
 मात्रा निम्नलिखित है।

उपरि

(N) नाइट्रोजन % मात्रा

1. अमोनियम सल्फेट → 20.6 % N
2. किसान खाद (CAN) → 25 % N

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक - 09 का उत्तर

उत्तर → खरपतवारों की दो विशेषताएँ
निम्नलिखित हैं।

1. ये अत्यधिक तीव्र गति से वानस्पतिक
वृद्धि करते हैं वा इनमें बीजों का
उत्पादन भी बहुत अधिक होता है।

उदा० चॉलाई - 1.96 000 बीज

B
S
E

2. खरपतवारों का प्रसारण बीजों
के साथ-साथ अन्य भागों
से भी होता है।

उदा० टूब पास

प्रश्न क्रमांक - 10 का उत्तर

उत्तर :- परिभाषा -> "मुख्य फसल की कटाई के बाद, उसी फसल की जड़ों से ली गई दूसरी फसल को पैडी फसल कहते हैं।"

यह क्रिया सामान्यतः गन्ने की फसल में की जाती है।

लाभ :- पैडी फसल में खेत की जड़ों, बीज एवं बीज की बुवाई करने की आवश्यकता नहीं पड़ती है।
 अतः कम व्यय पर फसल तैयार हो जाती है।



प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक - 11 का उत्तर

उत्तर → बीज द्वारा प्रसारण एवं वानस्पतिक प्रसारण में निम्नलिखित दो अन्तर प्रमुख हैं।

B
S
E

बीज द्वारा प्रसारण

वानस्पतिक प्रसारण

① बीज द्वारा प्रसारण करने में निषेचन एवं परागण की क्रिया होती है।

① वानस्पतिक प्रसारण में निषेचन एवं परागण की क्रिया नहीं होती।

② इस विधि द्वारा नई जातियों का विकास किया जा सकता है।

② जबकि वानस्पतिक प्रसारण से नई जातियों का विकास सम्भव नहीं है।

प्रश्न क्रमांक - 12 का उत्तर

उत्तर → पपैन से निम्नलिखित दो प्रमुख लाभ होते हैं।

1. पपैन का उपयोग चमड़ा को गलाने वा मांस को मुलायम बनाने में किया जाता है।

2. पपैन से का उपयोग अधिक कीमती सौन्दर्य प्रसाधनों के निर्माण में किया जाता है।

3. पपैन का उपयोग पाचन सम्बन्धी रोगों के उपचार के लिए किया जाता है।

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक - 13 का उत्तर

उत्तर → आम में रक्तान्तर फलन के निम्नलिखित दो प्रमुख कारण हैं।

1. फस पौधे में कार्बोहाइड्रेट वा नाइट्रोजन अनुपात (C:N) का असन्तुलित हो जाना रक्तान्तर फलन को बढ़ावा देता है। सर्वोत्तम C:N = 10:1 होना चाहिए।

2. पौधे की किस्म, नर वा मादा पुष्प अनुपात, अण्डाशय का गिरना एवं वातावरणीय क्रान्ति कारण भी रक्तान्तर फलन को प्रेरित करते हैं।

B
S
E



प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक - 14 का उत्तर

उत्तर → खाद एवं उर्वरकों में निम्नलिखित तीन अन्तर प्रमुख हैं।

खाद

उर्वरकों उर्वरक

① खाद को जैविक पदार्थों द्वारा खेतों वा खलिहानों में तैयार किया जाता है।

① जबकि उर्वरक रासायनिक पदार्थों द्वारा कृत्रिम रूप से कारखानों में तैयार किए जाते हैं।

② खाद में पौधों के लिए आवश्यक सभी पोषक तत्व उपस्थित होते हैं।

② जबकि उर्वरकों में पौधों के लिए आवश्यक एक, दो या तीन पोषक तत्व उपस्थित होते हैं।

③ खाद के प्रयोग से भूमि की रासायनिक जैविक एवं भौतिक दृशा में सुधार होता है।

③ जबकि उर्वरकों के अधिक प्रयोग से भूमि की भौतिक रासायनिक एवं जैविक दृशा में खराब होती है।

④ उदाहरण → गोबर की खाद, वर्मी कंपोस्ट आदि

④ उदाहरण → D.A.P., युरोनियम सल्फेट आदि।

B
S
E



प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक - 15 का उत्तर:

उत्तर → भारत में प्रमुख तीन शोभाकारी उद्यानों के नाम का स्थान निम्नलिखित है।

नाम

स्थान

- | | | |
|----|-----------------|-----------|
| 1. | शालीमार गार्डन | - श्रीनगर |
| 2. | ताज उद्यान | - आगरा |
| 3. | वृन्दावन गार्डन | - मैसूर |
| 4. | रामबाग | - आगरा |

B
S
E



प्रश्न क्रमांक - 16 का उत्तर

उत्तर → सहकारिता की परिभाषा →
 सहकारिता से तात्पर्य ऐसे संगठन से है, जिसमें व्यक्ति स्वचेष्टापूर्वक संकल्पित होकर अपनी शक्ति, प्रसाधन वा दान का प्रयोजन कर सबके वा निजी लाभ वा हानि के लिये कार्य करते हैं।

दो आधारभूत सिद्धान्त →

1. स्व-संचालित संगठन → सहकारिता एक ऐसा संगठन है, जिसमें व्यक्ति अपनी इच्छानुसार जुड़ सकता है, वा इच्छानुसार त्याग (बोड) सकता है।

2. पारस्परिक सहयोग से ज्ञान सहयोग → सहकारिता प्रत्येक अपने लिये जैसी कुंचित भावना का विरोध कर "प्रत्येक सब के लिये वा सब प्रत्येक के लिये" जैसी भावना का विकास करता है।

समानता →

सहकारिता में प्रत्येक व्यक्ति को समान अधिकार दिए जाते हैं, जाति, लिंग धर्म एवं वर्ग के आधार पर भेद-भाव नहीं किया जाता।



प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक - 17 का उत्तर

उत्तर → ये पादप पोषक तत्वों की अनिवार्यता की कसौटी आरतान वा स्ट्राउट ने प्रतिपादित की थी, जो निम्नलिखित है।

B
S
E

1. पोषक तत्व विशेष की कमी होने पर पौधों की वृद्धि रथ विकास रुक जाए वा पौधा अपने जीवन चक्र पूरा ना कर पाए।

2. तत्व विशेष पौधों की उपाप-उपापचयी क्रियाओं में सीधे भाग लेना चाहिए।

3. तत्व विशेष की कमी को उस तत्व के हालावा क्षन्य इसरा तत्व पूर्ति ना कर पाए तभी वह आवश्यक पादप पोषक तत्वों की श्रेणी में आता।

वर्तमान में 17 पोषक तत्वों को आवश्यक पोषक तत्वों की कक्षा दी है।

aser, Inkjet & Copier L



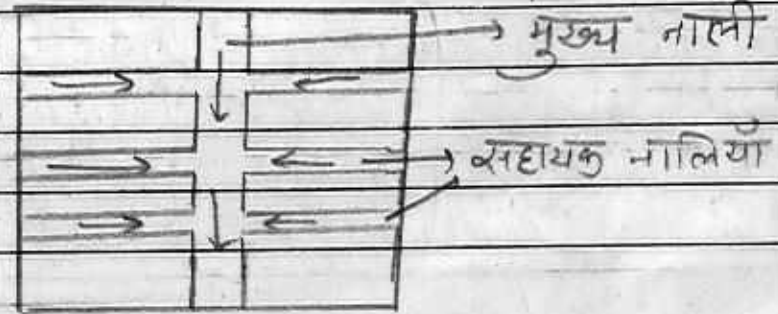
प्रश्न क्रमांक 18 का उत्तर -

उत्तर → परिभाषा : पौधों की उचित वृद्धि एवं विकास के लिए भूमि की सतह एवं अधोसतह से अनावश्यक जल को कृत्रिम रूप से बहार निकालने की क्रिया को, जल निकास कहते हैं।

जल निकास की मुख्य तीन प्रणालियाँ →

1. प्राकृतिक प्रणाली → इस प्रणाली में जल निकास नालियाँ खेत के प्राकृतिक ढाल के अनुसार बदलती रहती हैं। अन्त में नालियाँ द्वारा जल को मुख्य जल निकास नाली में पहुँचा दिया जाता है।

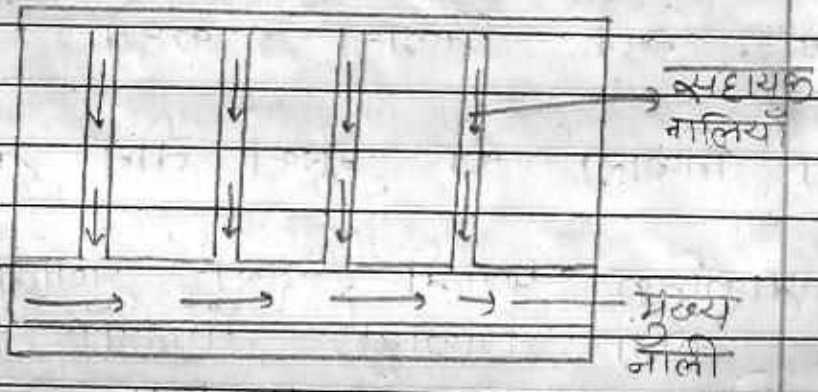
2. हरिंग बेन प्रणाली → इस प्रणाली में मुख्य जल निकास नाली खेत के बीचों-बीच वा सहायक नालियों दोनों ओर से अकार मुख्य जल निकास नाली से मिल जाती है।





प्रश्न क्र.

③ गिरिडिरोन प्रणाली → इस प्रणाली में मुख्य अक्ष निकास नाली खेत के सबसे अधिक ढलान वाले स्थान पर बनाई जाती है, वा सहायक नालियों द्वारा अलग-अलग मुख्य नाली में जोड़ दिया जाता है।



B
S
E

प्रश्न क्रमांक - 19 का उत्तर

उत्तर → टमाटर का सॉस या कैंचप बनाने की विधि -

- ① टमाटर का चुनाव → ठ सॉस या कैंचप हेतु साफ, स्वच्छ, दाग रहित वा अच्छे फे टमाटरो का चुनाव किया जाता है।
- ② टमाटरो की सफाई → चुने गए फलो को चलते हुए पानी में धो लेते है, वा कपडे की सहायता से अच्छी तरह साफ कर लेते है।
- ③ टमाटरो को स्टील के बडे भगोने मे अच्छी ढ तरह कुचल लिया जाता है, वा चलनी की सहायता से छानकर बीज वा छिलके को अलग कर दिया जाता है।
- ④ प्राप्त रस के को बूडे बर्तन मे लेकर साच पर चढा देते है वा रस मे छ चीनी का $\frac{3}{4}$ भाग मिला देते है।
- ⑤ खोलते हुए मिश्रण मे लहसुन, ज्वाज, इलायची वा मसालो का छोट कपडे को पोटली मे बाधरा लटका दिया जाता है।



प्रश्न क्र.

⑥ मिश्रण के गाढ़े हो जाने पर पोटली बहार निकाल लेते हैं, वा बची हुए चीनी की मात्रा मिला दी जाती है। तथा साइडिंग ड्रम्ल मिला देते हैं।

⑦ जब मिश्रण गाढ़ा हो जाए और पुलनशील पदार्थ की मात्रा 70% हो जाए तो कि केचप या सास को ड्रम्ल ड्राय से उतार लिया जाता है।

B
S
E

⑧ ड्राय से उतारने के बाद उसमें सोडियम बेंजोएट, रंग, रसेन्स आदि मिला दिए जाते हैं।

⑨ तैयार सास वा केचप को फिर निर्जमीकृत की गई बोतलों में भर दिया जाता है।

⑩ इस प्रकार तैयार ^{स्वादिष्ट} है टमाटर का सास या केचप।

⑩ इस प्रकार तैयार है स्वादिष्ट एवं पोषक तत्वों से भरपूर टमाटर का सास या केचप।



प्रश्न क्रमांक - 20 का उत्तर

उत्तर →

धान की खेती

(a) वानस्पतिक नाम → ओराइजा सटाइवा

(b) डेपॉज विधि → यह विधि फिलिपिन्स के मनीला शहर से विकसित की गई है। सर्वप्रथम ~~खेती~~ इस विधि में धान के बीज को 10-12 घण्टे के लिए पानी में गला दिया जाता है। वा इसके बड़े बीज को निकालकर पक्की फर्श पर 0.5-1 से.मी मोटा फैला दिया जाता वा पालिथिन से ढूँ ढक दिया जाता है। इस प्रकार 11-14 दिन में धान का रोपा रोपाई के लिए तैयार हो जाता है।
वर्तमान में आंध्र प्रदेश राज्य में इस विधि का सर्वाधिक प्रयोग किया जाता है।

(c) आर्मी वर्म → यह धान की फसल का प्रमुख कीट है। इसका प्रयोग धान की दुधियाँ अवस्था में अधिक देखने को मिलता है। इसके नियंत्रण के लिए सामान्यतः मलाथियॉन का विशेष किया जाता है।

प्रश्न क्र.

(d) प्रमुख रोग →

1. खैरा रोग → जिंक (Zn) की कमी से
2. पान रोग → नत्रजन (N) की कमी से
3. एलास्ट रोग → फफूंद जनित रोग
4. बैक्टीरियल बीमारी → जीवाणु जनित

B
S
E

(e) प्रमुख जातियाँ →

1. साकेत - 4
2. IR - 8
3. जया
4. TN - 1.
5. गोविन्द आदि।